* जैन जिनेन्द्र *

Page
Date

वर्तमान समय में जैन पाठशाला

* मंगलम् भगवान वीरो, मंगलम् गौतमो गणी ।
मंगलम् कुन्द कुन्दायो, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

अन्धकार की ओर पथ भटके हुए राहगीर को जाने से रोकता है....
मन में आये विकारो को सरलता और सहजता से दुर करता है....
पापो से दुर और पुण्य के करीब लाता है.....
और तो और मृत्यु का भय दुर कर जन्म-मरण निरबार (निकलने) का रास्ता बताता है......
एसा है हमारा **जैन धर्म**

पाठशाला का उद्देश्य :-

सुरज हुँ मै जिन्दगी की रमक छोड़ जाऊगाँ ।
डुब भी गया... तो एक नया....
सबक छोड़ जाऊगाँ !!!

हमारा जैन धर्म एक ऐसा ही सुरज है जो जिन्दगी को नयी दिशा और दशा दोनो देता है!

Scanned with CamScan

हमारा धर्म मानवता, नैतिकता, सदाचार, सत्यनिष्ठा एवं अहिंसा जैसे गुणो का दीपक मन मे प्रज्वलित करता है!

प्रत्येक देश, समाज अथवा परिवार की सबसे छोटी एवं महत्वपुर्ण इकाई होती है वह है..... *बचपन*

बच्चा नींव के उस पत्थर की तरह है जिस पर पुरे मकान का सन्तुलन बना हुआ रहता है। अत: उनका विकास आवश्यक है!

वर्तमान समय मे आधुनिकता के मायाजाल मे सभी जैन परिवार अपने वास्तविक मुल्यो को छोड़ कर अंधी दौड़ मे भाग रहे है.... ऐसे मे बच्चो को जैन धर्म के मुल सिद्धान्त भी नहीं पता है!

प्रत्येक गाँव/शहर मे जैन पाठशाला चलाने का एक मात्र उद्देश्य यही है कि आधुनिकता की इस दौड़ मे कही हमारा समाज धर्म विहिन ना हो जाये!!

पाप-पुण्य, हिंसा-अहिंसा, सत्य-असत्य इन सभी का आकलन स्वबुद्धि से कर जीवन का हर फैसला ले सके।

Scanned with CamScanner

अध्यापक की विशेषताएँ ⇒

गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है...
घडी-घडी काडत खोट।
अन्तर हाथ सहाय दे...
बाहर बाहे चोट !!

बच्चा सुनने से ज्यादा देखकर आचरण करता है! अतः यह महत्वपुर्ण जिम्मेदारी लेने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व पुरी पाठशाला का संचालन निर्भर करती है!

पाठशाला अध्यापक | अध्यापिका का स्वभाव सरल एवं मृदुभाषी होना चाहिए! पारदर्शिता एवं जैन धर्म का ज्ञान होना आवश्यक है!

वह अत्यन्त विद्वान ना हो तो चलेगा मगर अत्यन्त परिश्रमी होना आवश्यक है। अगर उसमे सिखने की प्रवृत्ति है तो निश्चित ही सिखाने की प्रवृत्ति प्रबल होगी!

हम बच्चो को जो सिखाते है वह प्रवृत्ति हममे होनी आवश्यक है अन्यथा बच्चे धर्म को ही गलत समझते हैं।

और वर्तमान समय में सबसे

Scanned with CamScan

महत्वपूर्ण विशेषता यह होनी चाहिए कि उसके पढ़ाने का तरिका पारम्परिक ना होकर सृजनात्मक एवं रचनात्मक हो! बच्चो के प्रत्येक तर्क को रोचक एवं शान्त चित्त से समाधान कर सके। वर्तमान में सभी बच्चे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ते है अत: पढ़ाने वाले अध्यापक को अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है ताकि ना समझ आने पर बच्चो को English में भी रूपान्तरित कर समझा सके! अगर teacher सही होगा तो बच्चे खुद ही जैनी आयेंगे! कहा भी गया है कि....

* What a teacher is, is more important than what he teaches.. *

शिक्षण पद्धति ⟹ ① पारम्परिक तरिको से हटकर रोचक ढ़ंग से पढ़ाना चाहिए!

② प्रत्येक Topic के बाद उससे सम्बन्धित कहानी अवश्य सुनावें!

Scanned with CamScanner

(3) दर्शन पाठ, बारह भावना आदि को प्रार्थना के माध्यम से याद करवाया जाय!

(4) नित्य छोटा सा नियम दिया जाय ताकि बच्चों को नियम के प्रति ~~[illegible]~~ कटिबद्धता आवे!

(5) साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी एवं कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाय!

(6) प्रत्येक माह परीक्षा ली जाय और प्रथम, द्वितीय आने वाले बच्चों को पारितोषित दिया जाय!

(7) बच्चों को घर पर कार्य देने की जगह जैनी में ही याद करवाया जाय!

(8) सप्ताह में एक दिन प्रत्येक रविवार को सामुहिक पुजन करवायी जानी चाहिए!

(9) बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा के साथ लौकिक शिक्षा भी देनी चाहिए!

(10) अत्यन्त भारी शब्दों को सहज एवं सरल भाषा में समझाना चाहिए!

** वर्तमान समय में सभी बच्चे Science Subject पढ़ रहे हैं! कुछ तथ्यों में शास्त्रों और विज्ञान में भिन्नता है ऐसी स्थिती में एक अच्छा अध्यापक वही है जो बिना शास्त्रों मे संशय करे उस तर्क का समाधान कर सके!

क्यों कि जहाँ तर्क है वहाँ नर्क है।
और जहाँ संशय है वहाँ ज्ञान अनिश्चय है।

अन्त में यही कहुगी कि प्रत्येक कार्य सम्भव है बस दृढ़ संकल्प आवश्यक है। और मुझे विश्वास है कि जैन पाठशाला इस संसार से जैन सिद्धान्तो को नहीं भूलने देगी!

* कौन कहता है आसमां मे सुराग नहीं होता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों...*

* जय जिनेन्द्र *

टीना जैन w/o दीपक जैन
कुआ
त०-चिखली 314030
जिला- डुंगरपुर (राजस्थान)

Scanned with CamScan